

---

---

---

---

---

---

---

---



---

---

---

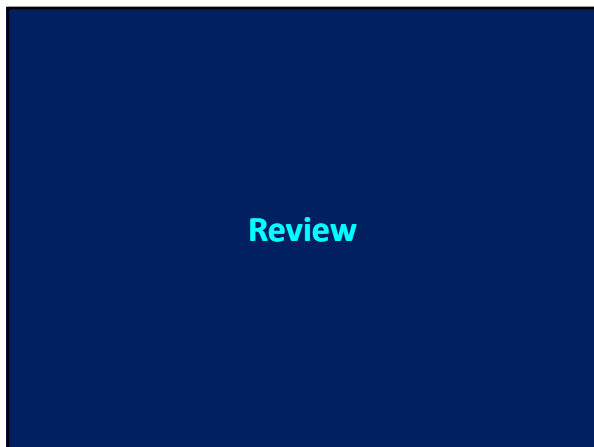
---

---

---

---

---



---

---

---

---

---

---

---

---

### Answering Eight Questions

- 1) Who wrote it? – Paul
- 2) Who was it written to? – Roman Believers
- 3) Where was it written from? – Corinth
- 4) When was it written? – A.D. 57
- 5) Why was it written? – Doctrinal Foundation
- 6) What is inside? – 7 Part Outline
- 7) What is it about? – Righteousness
- 8) What makes the book different? – Theological formality



---

---

---

---

---

---

---

---

### Structure

- I. Salutation (1:1-17)
- II. Sin (1:18–3:20)
- III. Salvation (3:21–5:21)
- IV. Sanctification (6–8)
- V. Sovereignty (9–11)
- VI. Service (12:1–15:13)
- VII. Summation (15:14–16:27)



---

---

---

---

---

---

---

---

### Ephesians 4:1

Therefore...

1-3



4-6

---

---

---

---

---

---

---

---

## What Is Inside?

1-3

Relationship  
Doctrine  
Orthodoxy  
Knowledge  
Belief  
Position  
Privileges

4-6

Responsibility  
Deed  
Orthopraxy  
Wisdom  
Behavior  
Practice  
Responsibility

---

---

---

---

---

---

---

---

## Romans 12:1

Therefore...

1-11



12-16

---

---

---

---

---

---

---

---

## Romans 12:1-15:13

- I. Service within the Church (12:1-13)
- II. Service within Society (12:14-13:14)
- III. Service toward the Weaker Brother (14:1-15:13)



---

---

---

---

---

---

---

---

**Romans 12:1–15:13**

- I. Service within the Church (12:1-13)
  - A. Consecration to God (12:1-2)
  - B. Use of spiritual gifts (12:3-8)
  - C. Love to one another (12:9-13)
- II. Service within Society (12:14–13:14)
- III. Service toward the Weaker Brother (14:1–15:13)




---

---

---

---

---

---

---

---

**Romans 12:1–15:13**

- I. Service within the Church (12:1-13)
  - A. Consecration to God (12:1-2)
    - 1. General description (12:1)
    - 2. Specific manifestation in the believer's life (12:2)




---

---

---

---

---

---

---

---

**Romans 12:1–15:13**

- I. Service within the Church (12:1-13)
  - A. Consecration to God (12:1-2)
    - 1. General description (12:1)
    - 2. Specific manifestation in the believer's life (12:2)




---

---

---

---

---

---

---

---

**Romans 12:1–15:13**

- I. Service within the Church (12:1-13)
  - A. Consecration to God (12:1-2)
  - B. Use of spiritual gifts (12:3-8)
  - C. Love to one another (12:9-13)
- II. Service within Society (12:14–13:14)
- III. Service toward the Weaker Brother (14:1–15:13)



---

---

---

---

---

---

---

---

**Romans 12:1–15:13**

- I. Service within the Church (12:1-13)
  - A. Consecration to God (12:1-2)
  - B. Use of spiritual gifts (12:3-8)
  - C. Love to one another (12:9-13)
- II. Service within Society (12:14–13:14)
- III. Service toward the Weaker Brother (14:1–15:13)



---

---

---

---

---


---

---

---

**Duty to Love - (Rom 12:9-21)**

- I. Within the church (9-13)
- II. Within society (14-21)



---

---

---

---

---

---

---

---

**Duty to Love - (Rom 12:9-21)**

I. Within the church (9-13)




II. Within society (14-21)

---

---

---

---

---

---

---

---

**Duty to Love - (Rom 12:9-13)**

**LOVE WITHOUT HYPOCRISY**

1. Abhor what is evil	6. Rejoicing in hope
2. Cling to what is good	7. Persevering in tribulation
3. Be devoted to one another	8. Devoted to prayer
4. Give preference to one another	9. Contributing to the needs of the saints
5. Serving the lord	10. Practicing hospitality

---

---

---

---

---

---

---

---

**Duty to Love - (Rom 12:9-13)**

Love without hypocrisy

1. Abhor what is evil
2. Cling to what is good
3. Be devoted to one another
4. Give preference to one another
5. Serving the lord



---

---

---

---

---

---


---

---

**Duty to Love - (Rom 12:9-13)**

Love without hypocrisy

1. Abhor what is evil
2. Cling to what is good
3. Be devoted to one another
4. Give preference to one another
5. Serving the lord



---

---

---

---

---

---


---

---

**Duty to Love - (Rom 12:9-13)**

Love without hypocrisy

1. Abhor what is evil
2. Cling to what is good
3. Be devoted to one another
4. Give preference to one another
5. Serving the lord



---

---

---

---

---

---


---

---

**Duty to Love - (Rom 12:9-13)**

Love without hypocrisy

1. Abhor what is evil
2. Cling to what is good
3. Be devoted to one another
4. Give preference to one another
5. Serving the lord



---

---

---

---

---

---

---

---

**Duty to Love - (Rom 12:9-13)**

Love without hypocrisy

1. Abhor what is evil
2. Cling to what is good
3. Be devoted to one another
4. Give preference to one another
5. Serving the lord



---

---

---

---

---

---


---

---

**Duty to Love - (Rom 12:9-13)**

Love without hypocrisy

1. Abhor what is evil
2. Cling to what is good
3. Be devoted to one another
4. Give preference to one another
5. Serving the lord



---

---

---

---

---

---


---

---

**Duty to Love - (Rom 12:9-13)**

Love without hypocrisy

6. Rejoicing in hope
7. Persevering in tribulation
8. Devoted to prayer
9. Contributing to the needs of the saints
10. Practicing hospitality



---

---

---

---

---

---

---


---



**Duty to Love - (Rom 12:9-13)**

Love without hypocrisy

6. Rejoicing in hope
7. Persevering in tribulation
8. Devoted to prayer
9. Contributing to the needs of the saints
10. Practicing hospitality




---

---

---

---

---

---

---

---

Romans 8:29-30

29 For those whom He foreknew, He also predestined to become conformed to the image of His Son, so that He would be the firstborn among many brethren; 30 and these whom He predestined, He also called; and these whom He called, He also justified; and these whom He justified, He also glorified.

Where's sanctification?

---

---

---

---

---

---


---

---

**Duty to Love - (Rom 12:9-13)**

Love without hypocrisy

6. Rejoicing in hope
7. Persevering in tribulation
8. Devoted to prayer
9. Contributing to the needs of the saints
10. Practicing hospitality




---

---

---

---






---

---

---

---

## Scripture's Five Crowns (Rev 4:10; 3:11; 2 John 8)

TITLE	SCRIPTURE	PURPOSE
 Incorruptible Crown	1 Cor . 9:24-27	Gaining Mastery Over the Old Man
 Crown of Rejoicing	1 Thess. 2:19-20	Soul Winning
 <u>Crown of Life</u>	<u>Jas. 1:12; Rev. 2:10</u>	<u>Enduring Trials</u>
 Crown of Glory	1 Pet. 5:2-4	Shepherding God's People
 Crown of Righteousness	2 Tim. 4:8	Longing for His Appearing

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

## Duty to Love - (Rom 12:9-13)

Love without hypocrisy

6. Rejoicing in hope
7. Persevering in tribulation
8. Devoted to prayer
9. Contributing to the needs of the saints
10. Practicing hospitality




---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

## Duty to Love - (Rom 12:9-13)

Love without hypocrisy

6. Rejoicing in hope
7. Persevering in tribulation
8. Devoted to prayer
9. Contributing to the needs of the saints
10. Practicing hospitality




---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

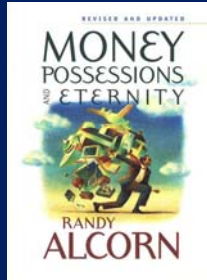
---

---



## How to Give

1. Generously (Exod 36:3-7)
2. Regularly (1 Cor 16:2a)
3. Voluntarily (2 Cor 9:7a)
4. Joyfully (2 Cor 9:7b)
5. Worshipfully (Acts 10:1-4)
6. Proportionately (1 Cor 16:2b)
7. Sacrificially (2 Cor 8:3)
8. Quietly (Matt 6:1-4)



*Alcorn, Money, Possessions, and Eternity, 229-41*

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

## Duty to Love - (Rom 12:9-13)

Love without hypocrisy

6. Rejoicing in hope
7. Persevering in tribulation
8. Devoted to prayer
9. Contributing to the needs of the saints
10. Practicing hospitality




---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

## Conclusion

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

Duty to Love - (Rom 12:9-21)

LOVE WITHOUT HYPOCRISY

- |                                   |  |
|-----------------------------------|--|
| 1. Abhor what is evil             | 6. Rejoicing in hope                       |
| 2. Cling to what is good          | 7. Persevering in tribulation              |
| 3. Be devoted to one another      | 8. Devoted to prayer                       |
| 4. Give preference to one another | 9. Contributing to the needs of the saints |
| 5. Serving the lord               | 10. Practicing hospitality                 |

---

---

---

---

---

---

---

---